International Journal of Applied Research 2015; 1(5): 85-86

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(5): 85-86
www.allresearchjournal.com
Received: 28-03-2015
Accepted: 13-04-2015

चन्द्रशेखर
पीएच.डी. (शोध छात्र) बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence:
चन्द्रशेखर
पीएच.डी. (शोध छात्र) बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हर्षवर्धन और उसका धर्म

चन्द्रशेखर

आजकल हर्षवर्धन का नाम एक महान बौद्ध नरेश के रूप में प्रसिद्ध है। वह सातवीं सदी का महान शासक माना जाता है। स्मिथ के अनुसार हर्ष ने जानबूझकर अशोक का अनुकरण किया था। गौरीशंकर चटर्जी ने उसके शासन को बौद्ध धर्म की दृष्टि से इतना अधिक महत्वपूर्ण माना है कि उन्होंने एक जगह पर लिखा है कि हर्ष के राज्यकाल के धार्मिक वातावरण के फलस्वरूप ही कुमारिल और शंकराचार्य जैसे महापुरुषों का आविर्भाव हुआ। धार्मिक दृष्टि से उस काल का यही सबसे बड़ा महत्व है। लालमनी जोशी के अनुसार वह सातवीं शताब्दी ई. का महानतम बौद्ध उपासक था। रवि शंकर त्रिपाठी के अनुसार हर्ष ने महायान बौद्ध धर्म के प्रति खुला पक्षपात दिखाया था। इन विद्वानों के मत के समर्थन में कई तथ्यों पर ध्यान देना पड़ता है। हर्ष ने ह्वेनसांग को संरक्षण प्रदान किया था अपना गुरु बनाया था। महायान बौद्ध धर्म को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करने के लिए हर्ष ने कन्नौज में मोक्ष परिषद आयोजित की थी। उसने हिन्दू देवताओं की अवहेलना करते हुए बुद्ध की पूजा की थी तथा बौद्ध श्रमणों को ब्राह्मणों से अधिक महत्व दिया था। उसने गंगा के किनारे सौ–सौ फुट ऊँचे हजारों स्तूप बनवाये थे, जगह–जगह पुण्यशालाएं निर्मित कराई थीं तथा बौद्ध संघारामों का निर्माण करवाया था। नालन्दा महाविहार को भी उसमें अनेक प्रकार की आर्थिक सहायता प्रदान की थी और उसने एक ताम्रपल मण्डित विहार बनवाया था। हर्ष की बौद्ध धर्म में श्रद्धा उसके द्वारा रचित 'नागादत्त' नाटक से भी प्रकाशित हुई है।

उपर्युक्त जितने भी तथ्य विद्वानों द्वारा व्यक्त किये गये हैं उसमें अपना एक तार्किक बल है। यहाँ पर इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि वह बौद्ध धर्म से सहिष्णुता नहीं रखता था। यदि वह बौद्ध नहीं भी था तो वह बौद्ध धर्म के करीब था। उसके मन में बौद्ध धर्म के प्रति आदर और सम्मान था। कुछ विश्वसनीय साक्ष्य प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि हर्ष मूलतः श्री कण्ठ जनपद का स्वामी था, जिसकी राजधानी थानेश्वर शिव और सूर्य की भक्ति का एक बड़ा केन्द्र था। उसके कम से कम तीन पूर्वज सूर्य के भक्त थे। बाण के अनुसार हर्ष का आदि पूर्वज पुष्यभूति शिव का अनन्य उपासक था और तीनों लोकों को अन्य सब देवताओं से शून्य समझता था। उसकी खण्डित नालन्दा मुहरों तथा मधुबन दानपत्रों में उसे स्पष्टतः परममाहेश्वर कहा गया है। इन सब अनुमानों के आधार पर हमें यह निष्कर्ष मिलने लगता है कि हर्ष शैव धर्म व सूर्य के उपासक थे। यदि उसने बौद्ध धर्म स्वीकार भी किया होगा तो शायद अपने जीवन के अन्तिम समय में ही किया होगा। वैसे भी माना जाता है कि पूर्वज जिस धर्म को मानते हैं उसी धर्म का पालन आगे आने वाली पीढ़ियाँ भी करती रहती है। जिस प्रकार से हर्ष के पिता और भाई शैव धर्म के अनुयायी थे उस आधार पर यह भी प्रमाणित होता है कि हर्ष भी शैव धर्म का अनुयायी रहा होगा। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि बौद्ध विद्वान् दिवाकरमित्र ने, जिससे हर्ष की भेंट राज्यश्री की खोज करते समय हुई थी। हर्ष को बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट किया होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हर्ष को कुछ विद्वान शैव तथा कुछ विद्वान उसे बौद्ध धर्म का उपासक मानते हैं। लेकिन जब हम अपना ध्यान हर्ष से पहले गुप्त वंश पर केन्द्रित करते हैं तो हमें पता चलता है कि गुप्तवंश के शासक भी वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। वे सब देवी–देवताओं (हिन्दू) की पूजा करते थे। उसके बावजूद उन्होंने बौद्ध धर्म के लिए विशाल महाविहार नालन्दा का निर्माण करवाया था। उसका कारण यह था कि वह बौद्ध धर्म को अन्य धर्मों की तरह सम्मान व आदर प्रदान करते थे, क्यों कि यह छठी सदी ई.पू. से चला आ रहा था। कई वंश के शासकों ने उसे राजकीय संरक्षण प्रदान भी किया था। वही बात गुप्त शासकों के लिए भी हुआ। वैसे भी गुप्त वंश स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर हर क्षेत्र, हर धर्म का विकास आवश्यक होता है अन्यथा एक धर्म के प्रति कम उदारता एक महान शासक को शोभा नहीं देता है। यही परम्परा सदियों से चली आ रही थी कि एक महान शासक अपने राज्य में किसी भी प्रकार की कमी अपनी जनता को महसूस नहीं होने देता है। हर्षवर्धन गुप्तों की तरह ही नीति को अपनाये रहा। वह शैव धर्म को मानने वाला भले ही था लेकिन बौद्ध धर्म के प्रति उसने आस्था रख करके अपनी महानता का परिचय दिया है। हम जानते हैं कि हर्ष का युग स्वर्ण युग नहीं था, उसके बावजूद वह गुप्तकालीन स्वर्णयुग की वह सारी सुविधा उपलब्ध

करवाना चाहता था कि जनता को किसी प्रकार की कमी महसूस न हो। उसने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया, उसके प्रति आस्था रखी। इन सब बातों का कारण हम कई दृष्टिकोणों से समझने पर ही निष्कर्ष तक पहुँच पाते हैं। वह उत्तर भारत का महान शासक बना, इसके पीछे बहुत बड़ा कारण था। वह यदि एक ही धर्म के मानने वाले को सुविधा प्रदान करता तो अन्य लोग उससे अलग हो जाते। जब कि एक शासक का महान कर्तव्य होता है कि वह सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करे, सबका दिल जीते अन्यथा वह महान कैसे बन सकता है। यही धार्मिक सहिष्णुता का कार्य हर्ष ने किया था। समाज के साथ एक अच्छा सामंजस्य बनाने की यह एक उत्तम नीति थी। कुछ लोगों का मानना है कि हर्ष ब्राह्मणों से ज्यादा बौद्धों को सहानुभूति प्रदान करता था। वह रोज 1000 बौद्धों तथा 500 ब्राह्मणों को भोजन कराता था। उसने यहाँ पर यह दिखाने का प्रयास किया है कि वह दोनों धर्म के अनुयायियों को समान अवसर प्रदान करता है। लेकिन यहाँ पर लोगों का मानना है कि वह बौद्ध था इसलिए ज्यादा लोगों का बुलाया। ब्राह्मण न होने के कारण उसने कुछ ही गिने लोगों को आमंत्रित किया। यहाँ पर हम देखते हैं कि हो सकता है कि कुछ लोग बुलाने पर न आये हों क्योंकि लोग अपने–अपने धर्म की प्रधानता के कारण आपस में सम्बन्ध रखने में अच्छा महसूस नहीं करते थे। हम यहाँ पर विद्वानों के विचार दोनों पक्षों में शैव और बौद्ध को देखते हुए यही अनुमान लगा सकते हैं कि उसने अपने शासन काल में दोनों धर्मों के प्रति सहिष्णुता रखी थी। पैतृक धर्म शैव धर्म को मानता रहा तथा बौद्ध धर्म को संरक्षण देने की प्रथा जो कि लम्बे समय से मौर्य, गुप्त आदि से चली आ रही थी उसका भी निर्वाह किया। इसीलिए उसका धर्म विवाद का विषय बना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वी.ए. स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया
2. गौरी शंकर चटर्जी, हर्षवर्धन
3. लाल मनी जोशी, स्टडीज इन बुद्धिस्ट कल्चर इन इण्डिया
4. रविशंकर त्रिपाठी, हिस्ट्री ऑफ कन्नौज टु दि मुस्लिम कोंक्वेस्ट
5. सैमुअल बील, दि लाइफ ऑफ ह्वेनसांग
6. थॉमस वाटर्स, ऑन शुआनच्वांग्स ट्रेवेल्स इन इण्डिया, भाग–2
7. एपिग्रेफिया इण्डिका–4, हर्ष का बांसखेड़ा दानपात्र
8. बाणभट्ट, हर्ष चरित, (जगन्नाथ पाठक द्वारा सम्पादित संस्करण) तृतीय
9. श्रीराम गोयल, 'मौखरि, पुष्यभूति चालुक्य युग'